RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-08
August-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

दक्षिण बिहार में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूपः एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 विनय कुमार मिश्रा

भूगोल विभाग वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

परिचयः

वस्तुतः जनसंख्या और संसाधन सम्बन्ध पर विचार का इतिहास महान दार्शनिक प्लेटो से प्रारम्भ हुआ था लेकिन इस पर व्यवस्थित विचार प्रस्तुत करने का प्रथम श्रेय राबर्ट माल्थरा को है। उसने अपने प्रथम निबंध में जनसंख्या सम्बन्धी बहुत से विचार प्रस्तुत किये, जिन्हें बाद में माल्थस की जनसंख्या का सिद्वान्त कहा गया। तब से बहुत विद्वानों ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करनेवाले नियमों को खोजने को प्रयास किया। बहुधा जनसंख्या के सिद्धान्त को दो वर्गो में विभक्त किया जाता है : प्राकृतिक आधार पर आधारित सिद्धान्त तथा सामाजिक आधार पर आधारित सिद्धान्त। प्राकृतिक आधार पर आधारित जनसंख्या सिद्धान्त का प्रतिपादन करनेवाला सर्वप्रथम विद्वान माल्थस था। उन्नीसवीं सदी में प्राकृतिक नियमों पर आधारित जनसंख्या सिद्धांत का प्रतिपादन करनेवाले अन्य विद्वान थामस सैडलर थामस डब्लडे और हर्बर्ट स्पेन्सर थे। सामाजिक नियमों पर आधारित जनसंख्या के सिद्धान्त का प्रतिपादन करनेवालों में हेनरी जार्ज, अर्सेन ड्यूमॉट, डेविड रिकार्डो और मार्क्स थे। आगामी पृष्ठों में इन विद्वानों के जनसंख्या सम्बन्धित विचारों की सक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः

दक्षिण बिहार का मैदानी भाग सम्पूर्ण बिहार के क्षेत्रफल का 43.43 प्रतिशत है। इन सम्पूर्ण प्रदेश पर बिहार की कुल जनसंख्या का 37.64 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यह एक त्रिभुजाकार मैदान है जो पश्चिम में चौड़ा तथा पूर्व में संकीर्ण हो गया है। इसकी स्थिति $24^{\circ}, 20'$ उत्तरी अक्षांश से $25^{\circ}, 40'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{\circ}, 20'$ पूर्वी देशान्तर से $87^{\circ}, 40'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह पूर्व से पश्चिम 373 कि0 मी0 लम्बा तथा उत्तर से दक्षिण अधिकतम 159 कि0मी0 चौड़ा है। इस मैदानी भाग का कुल क्षेत्रफल 42835 वर्ग कि0मी0 है। इस प्रदेश के पश्चिम में उत्तर प्रदेश की सीमा पर कर्मनाशा नदी पश्चिमी सीमा बनाती है। उत्तर में गंगा नीह दक्षिण एवं पूं0 में झारखण्ड प्रदेश स्थित है। 15 नवम्बर 2000 में बिहार से झारखण्ड राज्य के अलग अलग होने के कारण दक्षिण एवं पूर्व झारखण्ड राज्य की सीमा निर्धारित होती है।

दक्षिण बिहार में जनसंख्या का स्वरुप

भौगोलिक अध्ययन में मानव का एक आधारभूत स्थान है। मनुष्य किसी भी देश, राज्य तथा प्रदेश का एक भौगोलिक तत्त्व के साथ–साथ कारक एवं संसाधन भी है। मानव संसाधन की गुणवता पर ही उस राज्य अथवा प्रदेश का विकास निर्भर करता है। प्रदेश विशेष में निवास करनेवाले मानव उस समस्त प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों का तकनीकी ज्ञान, कला, विज्ञान आदि द्वारा उपयोग करके उस समस्त प्रदेश को विकसित करता है। देश में पाये जानेवाले विभिन्न संसाधनों में दक्षिण बिहार में मुख्य रूप से दो संसाधन जाते है : 1. जलोढ़ मिट्टी से निर्मित मैदान एवं 2. मानव संसाधन।

अतः दक्षिण बिहार का समुचित विकास तभी संभव है, जब उपरोक्त दोनों संसाधनों का वैज्ञानिक तरीके से समुचित विकास किया जाये। दक्षिण बिहार के उत्तरोत्तर विकास में बाधक प्राकृतिक आपदाए बाढ़ एवं सुखाड़ है। इनके अलावा सिंचाई के साधनों का अभाव, मशीनीकरण का अभाव, व्यवसायिक एवं औषधीय फसलों के उत्पादन में कमी आदि उल्लेखनीय कारणों से कृषि का समुचित विकास नही हो पा रहा है। बिहार के सीतिम क्षेत्रों की उपजाऊ मिट्टी सीमित मौसमी दशाओं तथा आदर्श मिट्टियों में एवं अल्पकालिक अवधि में प्राप्त मानसूनी दशाओं में गहन तरीके से विविध फसलों का उत्पादन किया जाता है। दूसरी ओर दक्षिण बिहार का मानव संसाधन भी गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी, कुपोषण, रूग्णता, अशिक्षा आदि सामाजिक विषमताएं एवं कुरीतियों का शिकार है।

जनसंख्या वृद्धि

पुरातात्विक प्रमाणों से यह सत्य प्रतीत होता है कि दक्षिण बिहार में आज से 3000वर्ष पूर्व भी मनुष्य रहते थे। दक्षिण बिहार का मैदानी भाग आदिम काल से ही लोगो का बसाव केन्द्र बिन्दु रहा है। इस प्रदेश के अनेक भागों में आर्य –काल एवं बौद्ध–काल की सभ्यता से परिपूर्ण बस्तियों का प्रमाण मिलता है। अतः ऐतिहासिक प्रमाणों से यह प्रतीत होता है कि यहाँ प्रचीन काल में बसाव था, परन्तु इसका सही आंकलन उपलब्ध नहीं है।

जनसंख्या की विभिन्न विशेषताओं सम्बन्धी आंकडे वर्तमान शताब्दी की देन है। आधुनिक ढंग से जनसंख्या का शुभारम्भ 1862 एवं 1972 ई0 में ही शुरू हो गया था। हालांकि 1872,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

1881 एवं 1891 में प्रस्तुत किए गए आंकड़े उपलब्ध नही है। वास्तविक रूप में सही जनगणना 1901 ई0 में प्रारम्भ हुई, जिसके आधार पर जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है। दक्षिण बिहार में जनसंख्या की वृद्धि का विवरण 1951 से 2011 तक दिया गया है।

धीमी गति से जनसंख्या में वृद्धि

सम्पूर्ण बिहार में 1901–1921 के दशक में जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत ही कम थी। 1901–1911 के दशक में जनसंख्या में मात्र 1.52 प्रतिशत वृद्धि हुई, जबकि 1911 से 1921 के मध्य जनसंख्या में वृद्धि नही हुई बल्कि हास(–0.97 प्रतिशत) हुआ। इस अवधि में अनेक प्रकार की महामारियों एवं दुर्भिक्षों का प्रभाव पड़ा। उस समयवृहद पैमाने पर प्लेग जैसी भयानक महामारियों का प्रकोप तथा अकाल का प्रभाव था। इसी कारण से 1921 के दशक में भारत के अन्य राज्यों में भी जनसंख्या का हास हुआ था।

मध्यम गति से जनसंख्या में वृद्धि

इस अवधि में बिहार में जनसंख्या की वृद्धि सामान्य गति से हुई। 1921 से 1931 के मध्य जनसंख्या में वृद्धि की दर 9.74 प्रतिशत रही। पुनः 1931 से 1941 के मध्य जनसंख्या में वुद्धि तीव्र गति से नहीं हुई। 1941 से 1951 के मध्य जनसंख्या में वृद्धि 10.58 प्रतिशत हुई, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जनसंख्या के स्थानान्तरण से प्रभावित हुआ। इस क्षेत्र में अधिक संख्या में अल्पसंख्यक वर्ग के लोग पाकिस्तान चले गये तथा अन्य राज्यों के नगरीय क्षेत्र में भी प्रवासित हुए। इस अवधि में नहरों का विकास किया गया, फलतः कृषि उत्पादन निश्चित हो पाया। हालांकि ब्रिटिश सरकार द्वारा आंशिक रूप से महामारियों पर नियंत्रण हुआ, परन्तु दुर्भिक्ष का प्रभाव यथावत रहा।

तीव्रगति से जनसंख्या में वृद्धि

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बिहार सहित देश के विभिन्न राज्यों में जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। इस अवधि को तीव्र विकास की अवस्था कहते है। इन दशकों में लगभग दक्षिण बिहार की जनसंख्या में तीन गुनी (29.0 मिलियन से 82.8 मिलियन) वृद्धि हुई। 1951–1961 के मध्य जनसंख्या में 19.79 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार 1961 से 1971, 1971 से 1981, 1981 से 1991 तथा 1991 से 2001 के मध्य क्रमशः 20.91%, 24.16%, 23.38% जनसंख्या में वृद्धि हुई। उपरोक्त दशकों में जनसंख्या में वृद्धि का मुख्य कारण स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के कारण मृत्यु दर में नियंत्रण है। दुर्भिक्ष, महामारियों एवं अन्य प्रकृतिक आपदाओं से रक्षा के लिए विविध उपाय किए गए। इस अधि में खाद्यान्न की आपूर्ति सही ढंग से होनें लगी तथा रोजगार के नये अवसर प्राप्त होने लगे। हालाकि स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होने के कारण मृत्यु दर में पर्याप्त कमी आयी, परन्तु जन्म दर में कोई संतोषजनक कमी नहीं हुई। इसका मूल कारण शिक्षा का अभाव, आर्थिक पिछड़ापन, परिवार नियोजन के प्रति निरूत्साह आदि उल्लेखनीय कारण है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् (1951–1961) के दशक में जनसंख्या में अप्रत्साशित वृद्धि हुई। इस अवधि में दक्षिण बिहार का औसत वृद्धि दर 19.79% था रोहतास (23.27%) जिलों में जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। उल्लेखनीय जनपदों में स्वास्थ्य सेवाओं में अत्यधिक सुधार के कारण शिशु मृत्यु दर कम रही। फलतः जनसंख्या में सर्वाधिक वद्धि हुई। इस अवधि में बहुत ही विषम रूप से जनसंख्या में वृद्धि हुई। इस अवधि में बंगलादेश से अधिक संख्या में शरणार्थी बिहार में आकर बस गए। कोसी नही पर नियंत्रण के कारण लोगों का बाह्य प्रवास रूक गया तथा जो लोग स्थानान्तरित हो चुके थे वे लोग भी पुनः वापस आने लगे। फलतः इन जिलों में जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई।

1961–1971 के दशक में दक्षिण बिहार प्रदेश में जनसंख्या की वृद्धि पिछले दशक की तुलना में कुछ कम हुई। इस दशक में इस राज्य में औसतन जनसंख्या में वृद्धि 20.91% हुई।

1971–1981 के दशक में दक्षिण बिहार में औसत जनसंख्या की वृद्धि 24.16% हुई। इस प्रदेश में भी अन्य राज्यों के समान ही स्वास्थ्य सेवाओं में प्रगति, बीमारियों पर नियंत्रण, मृत्यु दर में कमी एवं खाद्यान्न के वितरण प्रणाली में सुधार के कारण जनसंख्या में वृद्धि में तीव्रता आयी।

तलिका 2.1

दक्षिण बिहार की आबादी में दशकीय वृद्धि (1951–2011)

क्र0सं0	जिला	1951–61	1961–71	1971–81	1981–91	1991–2001	2001–2011
01	पटना	16.34	20.90	34.13	19.84	30.41	22.34
02	नालन्दा	17.36	20.08	25.68	21.25	25.12	21.27
03	भोजपुर	16.05	20.46	21.19	20.25	25.12	21.27
04	बक्सर	20.81	24.83	19.20	24.25	31.10	21.17
05	रोहतास	23.27	25.67	23.02	21.76	27.83	20.22
06	कैमूर	20.81	24.83	19.20	24.25	31.10	27.54

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

07	औरंगाबाद	19.38	22.28	21.75	24.49	30.72	24.75
08	जहानाबाद	17.21	19.41	20.89	18.48	30.82	21.34
09	अरवल	17.20	21.85	17.89	20.91	26.40	19.01
10	गया	18.20	23.42	24.62	23.42	30.34	26.08
11	नवादा	20.84	20.54	22.96	23.70	33.10	22.49
12	मुंगेर	18.60	18.27	21.86	17.79	20.58	19.45
13	शेखपुरा	16.89	19.59	18.59	19.59	18.94	20.82
14	लखीसराय	11.41	24.63	21.54	21.08	24.11	24.74
15	जमुई	20.51	24.38	20.86	21.90	33.03	25.54
16	भागलपुर	21.52	22.31	26.59	24.44	26.87	26.14
17	बांका	17.19	22.06	23.54	17.79	24.47	19.45

स्त्रोत : सांख्यिकी निदेशालय, बिहार सरकार, पटना

निष्कर्ष

सन् 1950 ई0 में जब सर जूलियन हक्सले ने यह भविष्यवाणी की थी कि सन् 2000 तक अबादी आठ अरब हो जायेगी जब बहुतों ने नाक भौह सिकोड़ कर उनकी आलोचना की थी। पर देखते–देखते सन् 2010 में सात अरब की रेखा को पार कर गई इस बढ़ती हुई जनसंख्या को पेट भरने के लिए कई अधिक उपजशीलता बीजों की किस्सों, रासायनिक खादों और कीटनाशक औषधियों का उपयोग बढ़ा। जबरदस्ती भूमि से अधिकाधिक उपज पैदा करने के लिए उसकी उर्वराशक्ति को बढ़ाने के लिये विभिन्न उपाय किये। इससे उपज तो बढ़ी पर मिट्टी और पानी का प्रदूषण भी बढ़ा। पेट भरने की समस्या के अलावा जनसंख्या में इस प्रगति के साथ बढ़ती भीड़ ने हमारी धरती की जो दूर्गति कर डाली है, उस पर भी विचार कर लेना चाहिये। जिस दर से जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, यदि वहीं दर रही तो सन् 2050 ई0 तक आज की अपेक्षा 50% अधिक उत्पाद होना चाहिये जो कि असम्भव है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि हर दस लाख जनसंख्या की वृद्धि पर भारतीय आहार के स्तर को देखते हुए प्रतिवर्ष 2.5 लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्नो 1/2 लाख टन अतिरिक्त दुध, घी, मक्खन व प्रोटीन पदार्थो की जरूरत पड़ती है।

संदर्भ सूची

1. पी0 दयाल, एम0 अताउल्लाह(2002) : बिहार संसाधन एवं नियोजन, जानकी प्रकाशन, पटना–4, पृ0 44
2. बी0 पी0 राव, आर0 बी0 सिंह (1993) : बिहार का भौगोलिक स्वरूप, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृ0 87
3. पंडित बा दू, कुमार अनिल (2005) : बिहार का भौगोलिक अध्ययन (2005), साहित्य भवन पब्लिकेशनस, आगरा, पृ0 126–135
4. सिन्हा, बी0 एन0 पी0, नाजिम एम0 पाठक सी0 एवं अहमद पी0 एफ0(2014) : बिहार का भूगोल, राजेश पब्लिकेशनस, नई दिल्ली, पृ0 253–264
5. अहसन के0 अहमद ई0 (2014) : बिहार : एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशनस, पटना, पृ0 254–57

© RRIJM 2015, All Rights Reserved